

Prepared by

Dr. Md.Haider Ali, Assistant Professor

Dept.of History, R.B.G. R. College

Maharajganj, JPU, Chapra

प्रश्न: रूसी क्रांति (1917) के कारणों का विश्लेषण करें ।

रूसी क्रांति बीसवीं सदी के इतिहास की सर्वाधिक केंद्रीय घटना थी। यह शीत युद्ध के रूप में अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचे विचारवादी-राष्ट्रवादी संघर्ष के युग में घटित हुई और एक विशेषरूप से राजनीतिकरण कर दी गई ऐतिहासिक घटना के रूप में विद्यमान रही। 1991 में सोवियत संघ के विघटन मात्रा ने ही अंततः रूसी क्रांति को एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में रूपांतरित किया। 1917 की रूसी क्रांति वस्तुतः जारशाही रूस में घटनाओं की एक श्रृंखला को संदर्भित है जो 1917 में सोवियत राज्य की स्थापना के साथ अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची जिसे सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ; यूनियन आफ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक - यूएसएसआर के नाम से जाना गया। 1917 की दो सफलतापूर्ण क्रांतियाँ सामूहिक रूप से रूसी क्रांति को संदर्भित हैं। पहली क्रांति ने निरंकुश जारशाही राजतंत्र को उखाड़ पेंफका। यह तत्कालीन रूस में प्रचलित जूलियाई अथवा प्राचीनशैली के तिथिपत्राक; कैलेंडर के मुताबिक 23 से 27 फरवरी 1917 तक के विद्रोह के साथ प्रारंभ हुई। दूसरी क्रांति अस्थायी सरकार के विरुद्ध बोलशेविक दल के नेतृत्व में 24 व 25 अक्टूबर को सशस्त्र विद्रोह के साथ प्रारंभ हुई और इसने रूसी समाज में आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक संबंधों की शीलता में परिवर्तनों को प्रभावित किया। इसे अक्सर बोलशेविक या अक्टूबर क्रांति कहा जाता है।

रूसी क्रांति के कारण

हालांकि रूसी क्रांति की घटनाएं आकस्मिक रूप से घटित हुईं किन्तु इसके कारण पीछे की लगभग एक शताब्दी में खोजे जा सकते हैं। 1917 से पूर्व रूसी समाज उल्लेखनीय परिवर्तनों से गुजर रहा था जो पुरानी व्यवस्था के लिये संकट में परिणमित हुए। इन परिवर्तनों द्वारा उत्पन्न नई सामाजिक और आर्थिक ताकतें भिन्न रुचियाँ और इच्छाएं रखती थीं। इस प्रकार 1917 तक पुराने और नए रूस के बीच अतिरेकी असंगति और भिन्नताओं का आविर्भाव हुआ। रूसी क्रांति ने इन नई ताकतों की प्रजातांत्रिक महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व किया। दूसरी तरफ रूसी राज्य प्राचीन शासक वर्गों के हितों का

प्रतिनिधित्व करता था। रूसी तानाशाही ;जारशाहीद्वि जागीरदार कुलीनों के समर्थन पर सुदृढ़ बनी हुई थी। अतएव 1917 तक न केवल पुरानी और नई ताकतों के बीच बलिक नई ताकतों और रूसी राज्य के मध्य भी संकट उभर आया। रिचर्ड पाइप्स के अनुसार "1917 की रूसी क्रांति कोई एक घटना या एक प्रक्रिया भी नहीं थी बलिक विघटनकारी और हिंसक कार्यों का एक सिलसिला था जो न्यूनाधिक सहवर्ती रूप में उपस्थित हुआ लेकिन जिसमें विभिन्न और किन्हीं अर्थों में परस्पर विरोधी उद्देश्यों वाले कर्तव्यार्ता समिलित थे। इसलिये इतिहास के इस मील के पथर की ओर ले जाने वाले कौन से अल्प अथवा दीर्घकालिक कारण थे? हम इसका विस्तृत परीक्षण करेंगे।

1. निरंकुश शासन और जार की अकुशलता

रूस में सरकार कुशल हुए बगैर निरंकुश थी। जार का प्रशासन निर्बल और भ्रष्ट था। उसका स्वेच्छाचारी शासन अपने लक्ष्य से अधिक समय तक जीवित रहा। पश्चिमी विचारों के प्रसार ने लोगों के मध्य प्रगतिशील विचार के विकास का नेतृत्व किया।

1. 31 जनवरी 1918 को सोवियत सरकार ने ग्रेगोरी निर्मित अथवा नई शैली का तिथिपत्राक ;कैलेंडरद्वि अंगीकार किया जिससे तिथियाँ तेरह दिन आगे सरक गईं, अतएव नई शैली के तिथिपत्राक में प्रथम क्रांति की तिथियाँ 8 से 12 मार्च की होंगी।

लोगों की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये पर्याप्त शक्तियों के साथ वास्तविक प्रतिनिधित्व वाले निकाय के लिये मांग एक समूहनकारी शक्ति थी। लोगों की मांगों को पूरा करने के बजाय रोमानोव वंश के जार निकोलस द्वितीय ने घोषित किया कि वह निरंकुश एकतंत्रा के सिद्धांतों का संरक्षण उसी कठोरता और दृढ़ता से करेगा जैसा उसके पूर्वजों द्वारा किया गया। उसने रूस के कुबुद्धिमान कान्स्टैन्टाइन प्रोबेदोन्स्तेव² को ताकतवर बनाए रखा। जार के प्रशासन पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला एक अन्य कुबुद्धिमान जार्ज रासपुतिन³ था। शासन का संचालन नौकरशाही ;अपफसरशाहीद्वि करती थी जो अकुशल तथा नमनीय थी। यह सच है कि रूस ने 1906 में अपनी पहली संसद ;ड्यूमाद्वि स्थापित की किंतु यह अंग्रेज प्रतिदर्श के अनुसार संसदीय संस्थानों की स्थापना की ओर नहीं ले जा सकी। इसे विधायन और वित्त पर संपूर्ण अधिकारिता प्राप्त नहीं थी। मंत्रिमंडल पर भी इसका कोई नियंत्रण नहीं था। यहां तक कि बजट भी संसदीय हस्तक्षेप से सुरक्षित रखा गया था। निर्वाचनों में शाही सरकार के लगातार हस्तक्षेप के कारण ड्यूमा केवल प्रतिक्रियात्मक निकाय बन कर रह गई थी। व्यक्तिगत

स्वतंत्रता के साथ ही साथ समाचार माध्यमों की स्वतंत्रता पर भी सभी तरह के प्रतिबंधों को थोप दिये गए थे।

इस एकतंत्रता की एक और निर्बलता स्वयं अंतिम रूसी जार निकोलस द्वितीय का व्यक्तित्व था। अल्पशिक्षित, बौद्धिक परिप्रेक्ष्य में संकुचित, लोगों की गलत या बुरी पहचान, रूसी समाज के बड़े हिस्से से कटा हुआ और केवल सेना और अपफसरशाही के संकीर्ण दायरों के संपर्क में रहनेवाला, अपने प्रभावशाली पिता के प्रेत से अभिप्रास्त और अंतहीन रूप से अभागी पत्नी के विधेवंसक अंतःप्रभाव के अधीन असहाय निकोलस द्वितीय अपनी उच्च स्थिति की मांगों के प्रति स्पष्ट तौर पर अयोग्य था और यह एक ऐसी अपर्याप्तता थी जिसकी क्षतिपूर्ति किसी आकर्षण, किसी शिष्टाचार के सौजन्य की कोमलता की किसी मात्रा से नहीं हो सकती थी। वह अदूरदर्शी था और देश के जीवन की वास्तविकताओं को समझने में उसकी चूक ने राजनैतिक प्रक्रियाओं में ऐसा हस्तक्षेप किया जो उसके लिये असंदिग्ध रूप से आत्मघाती था।

2. श्रमिक-वर्ग का असंतोष

रूस के किसान अपने जीवनयापन की परिस्थितियों से असंतुष्ट थे। वे धनमुक्त बंदोबस्त⁴ की शताब्दी से खुश नहीं थे जिसने उन्हें 1861 में श्रमिकता से मुक्त तो किया किन्तु जो श्रमिक अधिकारों की क्षति के लिये भूस्वामियों को उनके द्वारा मुआवजा दिये जाने की अपेक्षा करता था। यह समस्या 1900 के दशक के आरंभ में विट्टे द्वारा किये गए भूमि-सुधारों की असफलता से और जटिल हो गई। श्रमिकों ने दावा किया कि 18वीं शताब्दी में उनकी सैन्य वचनबद्धता से भूमिपतियों की मुक्ति उन्हें उन समयबद्ध दायित्वों से स्वयंमेव मुक्त कर देती है जो भूमिपतियों के प्रति उनकी देनदारी थी। अतः उन्होंने श्रमभार के बदले में वित्तीय भार के आरोपण के प्रति संविदा के निहितार्थ के उल्लंघन के रूप में नाराजगी दिखलाई। इन क्षतिपूर्ति ;निर्मुक्त भूगतानों⁵ की बलात वसूली 1907 तक जारी रही। बाद में किसानों को उनके द्वारा पहले से अधिभूत भूमि की अपेक्षा कम भूमि आवंटित की गई। उनके द्वारा अधिभूत भूमि का सर्वोत्तम उपयोग करने में उनकी असमर्थता से परिस्थितियां और भी बदतर हो गईं। रूस में श्रम पद्धति बहुत पिछड़ी हुई थी। सघन श्रम की प्रविधियों को अपनाकर श्रम को उच्चतर स्तर तक लाने के लिए किसानों के पास पूंजी और तकनीक का अभाव था। मिर⁶ को आवंटित भू-स्वामित्व की पद्धति द्वारा कई कब्जेदारों में वितरित उपखंडों के अंतर्निश्चय द्वारा और सभी संपत्ति संबंधों में इसके सदस्यों के कानूनी प्रतिनिधित्व के रूप में किसान परिवारों की स्थिति द्वारा व्यक्तिगत प्रयासों व कार्यों की संभावना और घटा दी गई थी।

2. प्रोबेदोनोस्तेव एक सशक्त राजतंत्रवादी था जिसे रूस के सर्वोत्तम हितों के लिये किसी भी मार्ग में उत्साही विश्वास था। वह एक प्रतिक्रियावादी था और उसने इन विश्वासों को पहले अलेक्जेंडर और पिफर निकोलस द्वितीय को अंतरित किया। उसके अनुसार राजा की निरपेक्ष सत्ता ईश्वर द्वारा सुनिश्चित थी। उसे यकीन था कि इस शक्ति का कोई अतिलंघन ईश्वर की इच्छाओं के विरुद्ध था। उसने निकोलस के मन में यह विश्वास भर दिया कि उसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य अपने उत्तराधिकारी को निरपेक्ष सत्ता का वैसा ही रूप हस्तांतरित करने का था जैसी उसे हस्तांतरित की गई थी। "प्रोबेदोनोस्तेव निकोलस के मसितष्क में अपने कुछ विचार भर देने में सफल रहा, विशेषरूप से यह विचार कि : यह जार शासक का कर्तव्य था कि वह अपने पुत्र को अपनी समस्त अखंडित सत्ता का हस्तांतरण करे।

3. एक अन्य शखिसयत जिसने रूसी क्रांति की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह रूसी रूढ़िवादी ;आर्थोडाक्सद्ध गिरजे में साधु था और जार पर वृद्धिशील प्रभाव तथा महत्व रखता था।

4. इसका प्रारंभ रूसी जार अलेक्जेंडर द्वितीय ;1855-1881द्ध द्वारा किया गया था।

5. किसानों को एक वार्षिक राशि 49 वर्षो± तक सरकार को अदा करनी होती थी। इस समय की समापित पर भूमि उनकी निजी संपत्ति हो जाती थी।

रूसी किसानों के असंतोष का मूल कारण भूमि की कमी थी। किसानों की भूखी आँखें बड़े भूमिपतियों की विशाल भूसंपदा पर गड़ गई। क्रांति के बहुत पहले उन्होंने भूमि के पिफर से वितरण के लिए दबाव डाला। 1906 से 1911 के दौरान प्रेमानमंत्री रहे पीटर स्टालिपिन ने यह विश्वास करते हुए किसानों पर विजय हासिल करने के सुनिश्चित प्रयास किए कि शांति के बीस वर्षो± के बाद क्रांति का कोई प्रश्न ही नहीं बचेगा। क्षतिपूर्ति ;निर्मुक्तद्ध भुगतानों को निरस्त कर दिया गया और किसानों को उनकी अपनी भूमि खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया गया ;1916 तक 2 लाख लोगों ने ऐसा किया और 3.5 लाख लोग साइबेरिया में प्रवास कर गए जहाँ वे उनके अपने खेत रख सकते थेद्ध परिणामस्वरूप कमाते-खाते किसानों के ;कुलक नामकद्ध वर्ग का आविर्भाव हुआ जिन पर स्टालिपिन ने आशा की कि विद्रोह के विरुद्ध समर्थन के लिये सरकार भरोसा कर सकती थी। 1911 तक यह स्पष्ट होता जा रहा था कि स्टालिपिन के भूमि सुधार वांछनीय परिणाम नहीं देंगे, अंशतः इसलिये क्योंकि उसकी योजनाओं के

मुकाबले किसानों की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही थी। ;1.5 लाख प्रति वर्ष की दर सेद्ध और क्योंकि खेती की विह्यां बढ़ती जनसंख्या के सहज समर्थन के लिये अकुशल थीं। 1911 में स्टालिपिन की हत्या ने जार के कुछ वास्तविक योग्य मंत्रियों में एक और संभवतया उस अकेले आदमी को मिटा दिया जो राजतंत्रा को बचा सकता था।

3. कर्मचारियों की अतृपित

19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षो के दौरान रूसी उधोग विशाल परिमाण में विकसित हुए। यह कई घटकों को समर्पित था। णिदासों की बंधानमुक्ति ने उधोगों के लिये सस्ते श्रमिकों की बहुलतापूर्ण आपूर्ति उपलब्ध करा दी। रेलमागो के निर्माण ने संचार के साधनों को खोल दिया और परिवहन की सुविधाओं में वृद्धि की। विदेशी णों ने विशाल औधोगिक उपक्रमों के लिये आवश्यक आधार उपलब्ध कराया। उधोग की अपवादात्मक वृद्धि के परिणामस्वरूप कारखाना प्रणाली तीव्रता से विकसित हुई। औधोगिक कर्मचारी हमेशा ही ग्रामीण श्रमिकों की अपेक्षा अपनी प्रति में कम रूढ़िवादी और अधिकांश बुद्धिमान होते हैं। कारखाना प्रणाली ने कर्मचारियों के पृथक्करण को दूर कर दिया और लोगों के विशाल समूह को एक साथ ले आई। इसने उन्हें उनकी आर्थिक शक्ति की अंतर्दृष्टि भी प्रदान की। कर्मचारी काम के लंबे घंटों, कम मजदूरी, क्रूरता, और लोलुप अर्थदंड प्रणाली से पीड़ित थे। सरकार कर्मचारियों की पीड़ाओं के प्रति सामान्यतया अंधा थी। पूंजीपतियों ने कारखानों के सुधार का मार्ग उस आधार पर अवरुद्ध कर रखा था जिसे वे लोगों के श्रम की स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित करते थे जिसका वास्तविक अर्थ निर्बलों के शोषण के लिये सबलों की स्वतंत्रता से था। हड़तालों के द्वारा रूसी कर्मचारियों ने अपनी शिकायतों के निवारण की तलाश की।

उधोगों के विस्तार ने न केवल एक औधोगिक सर्वहारा वर्ग का निर्माण किया बलिक समृद्ध निर्माताओं के वर्ग को भी असितत्व प्रदान किया। इस प्रकार रूस पूंजीवाद के चरण में प्रविष्ट हो गया। वह पश्चिमी औधोगीकरण के साथ पंकितबद्ध हो गया। तीव्रता से विकासशील उधोगों के लिये श्रमिक लगातार ग्रामीण जनसंख्या से नियुक्त होते रहे। भूमि से उनका आकसिमक संबंध विच्छेद और शिक्षित वर्ग से उनका अलगाव रूसी कर्मचारियों को क्रांतिकारी विचारों के लिए सत्कारशील बनाता था किंतु यह अनुकूल सिथति उनकी अशिक्षा, पिछड़ेपन, संगठनात्मक योग्यताओं के अभाव तथा श्रम में व्यवस्था की अनुपसिथति द्वारा विस्थापित हो जाती थी।

इससे अलग रूसी उद्योग अपनी तकनीकों और पूंजीवादी संरचना में उन्नत देशों के स्तर पर खड़ा हो गया और कुछ मामलों में तो इसने उन्हें बाहर कर दिया। रूस में उद्योगों की कापफी सघनता थी। एक हजार से अधिक कामगारों की नियुक्ति करने वाले उपक्रमों ने रूसी श्रमिकों के 41.4 प्रतिशत की नियुक्ति की जिसका अर्थ था कि पूंजीपतियों और कामगारों के मध्य कोई अंतर्वर्ती परत मौजूद नहीं थी।

6. ग्रामीण समुदाय

अपनी पुस्तक 'द रशियन रिवोल्यूशन में शीला पिफ्टजपैट्रिक उल्लेख करती हैं कि " ... जब स्वामी या प्रबंधक ने संयंत्रा का परित्याग कर दिया या इसे बंद करने की चेतावनी दी क्योंकि यह ढान का नुकसान कर रहा था तब कर्मचारियों को बेरोजगारी से बचाने ;के क्रम में कारखानोंद्ध को कारखाना समितियों ने अह्ािग्रहीत कर लिया। जब ऐसी घटनाएं कापफी सामान्य हो गईं तब कामगारों के नियंत्राण की परिभाषा कामगारों के स्व-प्रबंधान जैसी किसी वस्तु के समीप आ गई। वे लिखती हैं कि सरकार और कामगारों के बीच बढ़ते हुए मतभेदों की वजह से वास्तविक शिकायतें भी बढ़ गईं और कामकाजी वगो± की निगाहों में स्व-प्रबंधान का कार्यक्रम हर हालत में अह्ाििक आवश्यक बन गया। कामगारों का समर्थन हासिल करने के षडयंत्रा रच रहे विदेशी अराजकतावादी तत्त्वों के बजाय ये पेत्रोग्राद की परिसिथतियां थीं जो कामगारों के अह्ाििक विद्रोही बनने का कारण बनीं। "कामगार ... बोलशेविकों जिन्होंने कारखाना समितियों में प्रभाव अर्जित कर लिया ;द्वारा उत्तेजित किये गएद्ध कामगार वगो± में यह भाव उभर रहा था कि 'सोवियत शक्ति का अर्थ जिले, शहर और शायद सारे देश में कामगारों का संंपूर्ण स्वामित्व होना है यह बोलशेविकवाद की अपेक्षा अराजकतावाद अथवा अराजक-श्रमिकसंघवाद के समीपतर था और बोलशेविक नेता वास्तविकता में इस विचार के सहभागी नहीं हो पाए कि सोवियतों और कारखाना समितियों के जरिये कामगारों का प्रत्यक्ष प्रजातंत्रा दलीय नेतृत्व में सर्वहारा की तानाशाही की उनकी अपनी अवह्ाारणा का युक्तिसंगत अथवा वांछनीय विकल्प था।

4. समाजवाद का प्रसार

जैसे ही रूस के औद्योगीकरण की तीव्र प्रगति प्रारंभ हुई, औद्योगिक कामगारों की एक नई पीढ़ी उभरी जिसे भीड़ भरे शहरों में उन परिसिथतियों में कठोर श्रम करना पड़ता था जो उनके जीवन को असहनीय समस्या बना देते थे। स्वाभाविक रूप से इसी वर्ग से समाजवाद के संदेश को सर्वाह्ाििक प्रत्युत्तर प्राप्त हुए। 1890 के दशक में कार्ल मार्क्स7 के विचार उपन्यासकार मैकिसम गोर्की जैसे घोर परिवर्तनवादियों द्वारा प्रचारित और प्रसारित किये गए और क्रांतिकारी समाजवाद ने अपने उेश्यों के लिये बहुत से प्रबुद्ध

लोगों पर विजय प्राप्त करते हुए कारखाना-कामगारों के मध्य त्वरित प्रगति प्राप्त की। 1895 में कामगारों के सामाजिक प्रजातांत्रिक दल की स्थापना हुई जिसके कार्यक्रम अन्य देशों के समाजवादियों के समान थे। अब मध्यवर्गीय परिवर्तनवादियों के नेतृत्व में किसानवर्ग ने शहरी सर्वहाराओं के उदाहरण की प्रतिस्पर्धा की और 1901 में ऐसे मंच के साथ सामाजिक क्रांतिकारी दल गठित किया जिसमें अभिजातों की विशाल भूसंपदा की जब्ती और उनका छोटी व्यक्तिगत कब्जेदारियों में वितरण समिलित था। यह दल एक हथियार के रूप में आतंकवाद में विश्वास रखता था हालांकि वर्तमान में इसे आरक्षित रखा गया था। इस प्रकार एक क्रांतिकारी आंदोलन का पदार्पण हुआ जो समाजवादी सिद्धांतों के आधार पर रूस की सामाजिक व राजनैतिक प्रणाली के पुनर्निर्माण का लक्ष्य रखता था। 1903 में सामाजिक प्रजातांत्रिक दल में दलीय अनुशासन और कार्यविधि के प्रश्न पर विभाजन हुआ और लेनिन के नाम से विख्यात ब्लादिमीर इलियच उल्यानोव के नेतृत्व में इसका उग्रवादी शाखा मुख्य काया से अलग हो गया। यह शाखा बोल्शेविकों ;बहुसंख्यक लोगोद्ध के रूप में जाना गया और दल का आधिकारिक नरमपंथी शाखा मेन्शेविकों ;अल्पसंख्यक लोगोद्ध के नाम से जाना गया। एक दल के रूप में मेन्शेविकों से बोल्शेविक संख्याबल में बहुत कम बने रहे हालांकि उन्होंने उन प्रश्नों पर बहुमत अर्जित किया जो उनके अलगाव का कारण थे। दोनों ही हड़तालों और क्रांति में यकीन रखते थे किंतु बोल्शेविकों ने महसूस किया कि औद्योगिक कामगारों के साथ-साथ किसानों का समर्थन हासिल करना अनिवार्य था जबकि मेन्शेविकों ने किसानों के समर्थन की मूल्यवत्ता पर संदेह करते हुए मध्यवर्ग के साथ घनिष्ठ सहयोग का पक्ष लिया। लेनिन इसके तगड़े विरोधी थे। 1912 में नया बोल्शेविक समाचार पत्रा प्रावदा ;सत्यद्ध प्रकाशित होने लगा जो बोल्शेविक विचारों के प्रचार और पहले से विकासशील हड़तालों की लहर के राजनैतिक दिशानिर्देश के साधन के रूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

7. कार्ल मार्क्स ने 'कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो' ;साम्यवादी घोषणापत्राद्ध का लेखन किया जिसे रूसी क्रांति का धर्मग्रंथ कहा जाता है। अपनी पुस्तक में मार्क्स ने घोषित किया कि अब तक मौजूद सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। उन्होंने भविष्यवाणी की कि बुर्जुआ और सर्वहारा के मध्य जारी इस संघर्ष में उत्तरवर्ती विजय के लिये बाध्य है जो सर्वहारा की तानाशाही की ओर ले जाते हुए अंततः वर्गविहीन समाज को स्थान प्रदान करेगा।

5. नव मध्यवर्गों द्वारा उदारवादी सुधारों की मांगें

जब बीसवीं शताब्दी ने रूस में राजतंत्र को चुनौती का उदघाटन किया तो यह समाजवाद की अपेक्षा उदारवाद की ओर से आकर्षित थी। औद्योगिक क्रांति ने सुविकसित और उफरता हुआ मध्यवर्ग का निर्माण किया तथा व्यापारियों, कारखाना मालिकों एवं अन्य व्यवसायियों ने प्रतिनिधिपरक सरकार की किसी प्रणाली की मांग कर रहे बुद्धिजीवी उदारवादियों से हाथ मिला लिये। जेम्स भी सक्रिय हो गई और सुधारों के सुनिश्चित कार्यक्रम का खाका तैयार किया गया जो निष्पक्ष रूप से निर्वाचित राष्ट्रीय विधायिका, उत्तरदायी मंत्रालय, सभी नागरिकों की समता और समाचार जगत, धर्म व भाषण की स्वतंत्रता की मांग करता था। किंतु जार निकोलस द्वितीय जो प्रतिक्रियावादी मंत्री प्लेहवे के प्रभाव की आश्रित था, इन मांगों के प्रति कानों से बहरा बन गया। रूसी सरकार इस पहचान में विफल रही कि लोग राजा की अनिवार्यता को पीछे छोड़ चुके हैं और पुरानी बोटलों में नई मदिरा नहीं रखी जाएगी। इसलिये यह संगठित हो रहे विप्लव के प्रति कापफी लापरवाही के साथ लगातार उत्पीड़क और दमनकारी बनी रही। जार के दुराग्रही स्वभाव और उसके आसपास हिलोरे मारती नई शक्तियों की निगूढ़ क्षमता के प्रति उसका अंधापन उन महत्वपूर्ण कारणों में थे जिन्होंने रूसी क्रांति को जन्म दिया।

6. 1905 की क्रांति

1905 की क्रांति 1917 की क्रांति का बावर्दी पूर्वाभ्यास सिद्ध हुई। आसवित होता रहा विप्लव आगे 1905 में पफट पड़ा जब सरकार रूस-जापानी युद्ध में विफलता द्वारा साख गँवा बैठी। युद्ध में रूसी सेना को भारी पराजय का सामना हुआ। इसने रूस में क्रांतिकारी आंदोलन को और मजबूती दी। समूचे देश में आंदोलन और उपद्रव हो रहे थे। 9 जनवरी 1905 को सेंट पीटर्सबर्ग में अपनी पत्नियों व बच्चों के साथ जार को याचिका देने शीत महल ;विन्टर पैलेस जा रहे कर्मचारियों के शांतिपूर्ण समूह पर गोलियां चलाई गईं। एक हजार से अधिक लोग मारे गए और हजारों घायल हुए। यह काला दिन रक्तम रविवार ;ब्लडी संडे के रूप में विख्यात है। हत्याओं के समाचार ने समूचे रूस में अभूतपूर्व उपद्रव उकसा दिया। यहाँ तक कि थल और नौ सेना के कुछ हिस्से भी विद्रोही हो गए। कामगारों के प्रतिनिधियों की परिषद अथवा 'सोवियत' कहा जाने वाला एक नया संगठन इस क्रांति में विकसित हुआ जो 1917 के महापरिवर्तन में निर्णायक सिद्ध हुआ। किसानों की सोवियतें भी गठित हुईं। जेम्स ने सुधारों की मांग की, कामगारों ने काम छोड़ दिया और किसानवर्ग भूमिपतियों को लूटने लगे। बढ़ती हुई अव्यवस्था के शमन में असमर्थ जार ने सुधारों का वादा किया और ड्यूमा अथवा राष्ट्रीय विधायिका आहूत करने की घोषणा की। किंतु राजतंत्र के साथ संसदीय सरकार का प्रयोग

विपफलता में समाप्त हुआ। विपक्ष की श्रेणी में विभाजन का लाभ उठाते हुए जार ने ड्यूमा को विशुद्ध सलाहकार निकाय तक सीमित कर दिया था और राजतंत्र की जीत की सुरक्षित रखने में समर्थ था। 1906 तक क्रांतिकारी लहर अपनी मुख्य शक्ति व्यय कर चुकी थी और प्रतिक्रिया अपने पूरे जोर पर थी। स्टालिन के प्रभाव के तहत सरकार ने दमन और रियायत की वैकल्पिक ; कभी-कभी संयुक्त नीतियों को जारी रखा और पहले के द्वारा उत्पन्न किये गये द्वेष ने दूसरे से प्राप्त किसी लाभ को और अधिक नाकारा कर दिया।

7. ड्यूमा ; रूसी संसद की शक्तियों के ङास के लिये प्रयास

1905 की क्रांति की मृत्यु की अपेक्षा पफौरन से पेशतर निकोलस द्वितीय ने लोगों से उदारवादी रियायतें वापस लेने का विचार बना लिया। पहली ड्यूमा की बैठक से पूर्व सरकार ने आंारभूत कानूनों वाले संविान की घोषणा कर दी। इस संविान में जार 'सर्वोच्च निरंकुश शक्ति के रूप में वर्णित था। उसके पास सेना और विदेश नीति के नियंत्रण, ड्यूमा के विघटन और मंत्रियों को पदच्युत करने के अधिकार सहित वृहत कार्यकारी और विायी शक्तियां थी

8. 1864 के सुधारों ने जनपदीय एवं प्रादेशिक विधिकाओं ; जेम्स्वाद्ध का गठन किया। जनपदीय विधिकाओं के सदस्य प्रत्येक ग्रामीण जनपद के निवासियों, किसानों व अभिजातों, द्वारा एक समान रूप से चुने जाते थे। तदुपरांत जनपदीय विधिकाओं के सदस्यगण प्रादेशिक विधिकाओं के प्रतिनिधियों का चयन करते थे। निर्वाचन की यह प्रणाली अभिजातों की शक्तियों में कटौती करने तथा गैर-अभिजात वर्गों को अधिक राजनैतिक अधिकार देने की प्रवृत्ति रखती थी।

9. यह एक संभावित 'संसद थी जो जार को केवल सलाह दे सकती थी जिसे उपेक्षित कर दिया जाता था- जो सदस्य जार का विरोध करते थे मृत्युदंडित या कैद कर दिये जाते थे।

ड्यूमा में उच्च और निम्न सदन समिमलित थे। उच्च सदन के आो सदस्य जार द्वारा मनोनीत होते थे। हालाँकि निम्न सदन व्यापक पुरुष मतधिकार और गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित होता था, अप्रत्यक्ष मतदान की जटिल प्रणाली समृद्धतर वर्गों की पक्षपाती थी। मतदाता पहले निर्वाचकों के लिये मतदान करते थे जो अंततः ड्यूमा के सदस्यों के लिये मतदान करते थे। निर्वाचन की यह प्रणाली समृद्धतर वर्गों का पक्ष लेती थी जो निर्वाचनों की इस पूरी श्रृंखला में भाग लेने में सक्षम थे। समृद्धतर वर्ग अपने राजनैतिक दृष्टिकोण में सामान्य तौर पर अनुदारवादी थे और जार के समर्थन का रुझान रखते थे। इस

प्रकार जार की निरंकुश शक्तियां संविधान के अलोकतांत्रिक प्रावधानों द्वारा भलीभाँति सुरक्षित थीं।

पहली ड्यूमा ने मई-जुलाई 1906 में स्थान ग्रहण किया। हालाँकि अप्रत्यक्ष मतदान समृद्धतर और राजनैतिक रूप से अनुदार वगो±10 का पक्षपाती था, ड्यूमा में पदासीन होने के लिये निर्वाचित होने वालों की बहुसंख्या सरकार विरोधी थी। पहली ड्यूमा में निम्नलिखित समूहों के सदस्य सम्मिलित थे: संवैधानिक प्रजातंत्रवादी अथवा कैडेट¹¹, अक्टूबरवादी¹² राष्ट्रीय समूह, श्रमिक समूह, किसान सदस्य¹³ और कुछ सामाजिक प्रजातंत्रवादी ;समाजवादी दलों ने प्रथम निर्वाचन का बहिष्कार किया क्योंकि वे सेंट पीटर्सबर्ग और मास्को सोवियत का दमन विस्मृत नहीं कर पाये थे। किंतु कुछ सामाजिक प्रजातंत्रवादियों ने दल के आदेश का उल्लंघन कर निर्वाचनों में भाग लिया था। कैडेटगण सबसे बड़ा दल थे। इन राजनैतिक समूहों व दलों ने कराधान सहित राज्य के सभी मामलों पर पूर्ण नियंत्रण और मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्व की मांग की। दूसरे शब्दों में वे संवैधानिक राजतंत्र चाहते थे। जार ने तत्परता पूर्वक ड्यूमा को भंग कर दिया। कुल मिलाकर पहली ड्यूमा 73 दिनों तक चली।

दूसरी ड्यूमा के निर्वाचनों में जार ने बहुत से सरकार विरोधी मतदाताओं को अपनी प्रत्याशिता अथवा मताधिकार को छोड़ देने के लिये अभिप्रास किया। किन्तु यह अभिप्रास व्यर्थ था। बहुत से सरकार विरोधी प्रत्याशी दूसरी ड्यूमा के लिये निर्वाचित हुए। जार को गंभीर चेतावनी के रूप में 65 सामाजिक प्रजातंत्रवादी चुने गए। सामाजिक प्रजातंत्रवादियों ने जार की सरकार के उदारीकरण की मांग उठाई। परिणामस्वरूप दूसरी ड्यूमा भी पहली ड्यूमा के समान नियति को प्राप्त हुई। तीन महीनों के भीतर ;मार्च-जून 1907द्ध यह जार द्वारा पुनः भंग कर दी गई।

जार विद्रोही ड्यूमा का पिफर से सामना नहीं करने पर दृढ़ था। उसने बहुत से किसानों और गैर रूसी राष्ट्रीयता वालों को मतों से वंचित करने और वे सारे मत समृद्ध भूमिपतियों को देने के लिये मताधिकार को रूपांतरित कर दिया जिससे ड्यूमा के 60 प्रतिशत स्थान उनके द्वारा ग्रहण किया जाना सुनिश्चित किया जा सके।¹⁴ नई मताधिकार प्रणाली की वजह से ड्यूमा में निर्वाचित अधिकतम लोग सरकार के समर्थक थे।

तीसरी ड्यूमा ;1907-1912द्ध और चौथी ड्यूमा ;1912-1917द्ध ने पांच वर्षों का अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा किया। उनमें अक्टूबरवादियों और राजतंत्रवादियों का प्रभुत्व था। कैडेट और मुटठीभर समाजवादी मिलकर ड्यूमा के लगभग एक चौथाई स्थानों पर ही कब्जा रखते थे। जैसे-जैसे ड्यूमा अपने

संयोजन में अनुदारवादी हुई ड्यूमा में रूसी आम जनता की कुंठाओं की अभिव्यक्ति के अवसर कमतर होते गए। बहुत से रूसी लोग पुनः जारवाद के विरोधी बन गए।

10. अनुदार वर्गों में भूमिपति, समृद्ध व्यापारी और जार-समर्थक सम्मिलित थे।

11. कैडेटों में उदारवादियों की गणना थी जो विधायिका शक्तियों सहित संसद की स्थापना की मांग करते थे। उनके विचार बहुत हद तक ब्रिटानी उदारवादियों के समान थे।

12. अक्टूबरवादी दक्षिणपंथी उदारवादी थे। वे अक्टूबर घोषणापत्र से पर्याप्तरूपेण संतुष्ट थे तथा और अधिक राजनैतिक अधिकारों की मांग नहीं करते थे।

13. राष्ट्रीय ;देशीयद्ध समूह देशीय अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधि था। श्रमिक समूह और ण्षक सदस्य उन किसानों व कामगारों के प्रतिनिधि थे जिन्होंने सामाजिक क्रांतिकारी दल अथवा सामाजिक प्रजातंत्रावादी दल की सदस्यता ग्रहण नहीं की थी।

14. 1907 की सरकारी आज्ञापित के अनुसार ड्यूमा को निर्वाचक मंडलों की संख्या द्वारा वर्गीय आधार पर निर्वाचित होना चाहिये। समृद्धतर भूस्वामी 60 प्रतिशत, किसान 22 प्रतिशत, व्यापारी 15 प्रतिशत और कामगार 3 प्रतिशत निर्वाचकों को चुनते थे।

अक्टूबर घोषणापत्र में लोगों को नागरिक स्वतंत्रताएं स्वीकृत करने के वायदे के बावजूद 1906 से 1911 तक प्रेानमंत्री रहे स्टालिपिन द्वारा दमनकारी नीतियाँ अपनाई गईं। वह यहूदियों के उत्पीड़न और ग्रामीणक्षेत्रों में दंगाइयों के प्रति निर्दयतापूर्ण बर्ताव के लिये कुख्यात था। पिफनलैंड के राष्ट्रवादियों को दंडित करने के लिये उसने पिफनलैंड को स्वतंत्रता से वंचित कर दिया। लेनिन सहित कई सामाजिक प्रजातंत्रावादी निर्वासित कर दिये गए।

8. गैर रूसी राष्ट्रीयता वाले अल्पसंख्यकों का असंतोष

रूसी साम्राज्य एक बहु-देशीयता वाला साम्राज्य था। रूस की लगभग आधी जनसंख्या पोलैंडवासियों पिफनलैंडवासियों, यहूदियों, लातवियाइयों और लिथुवानियाइयों जैसे राष्ट्रीय ;देशीयद्ध अल्पसंख्यकों से

निर्मित होती थी। यदि रूसी सरकार चाहती तो वह उन्हें रूसी राज्य के साथ सामंजस्यपूर्ण करने और सर्वेष्टिक क्षमतावान विद्रोही केंद्रीय विशाल रूसी समूह के विरुद्ध खड़ा करने के लिये सबकुछ कर सकती थी। किंतु जार की सरकार ने कुछ भी नहीं किया उल्टा इसने उनके प्रति जबरिया 'रूसीकरण' की नीति का अनुसरण किया। गैर-रूसी राष्ट्रीयताओं की भाषाओं में पुस्तकों व समाचारपत्रों का प्रकाशन पूर्णतया प्रतिबंधित था। विधालयों में विधार्थियों को उनकी मातृभाषा में कोई निर्देश प्रदान करना संभव नहीं था। रूसी सरकार ने गैर रूसियों के लिये द्वेष और अपमान को इरादतन प्रोत्साहित किया। रूसी जनसंख्या उन्हें भिन्नहीन और निम्नतर जातियों के रूप में देखने की अभ्यस्त बनाई गई थी। उच्चपदस्थ सरकारी अष्टाधिकारी अष्टाधिकतम रूसी थे और प्रशासन के असंख्य विभागों के संपूर्ण क्रियाकलाप रूसी भाषा में परिचालित होते थे। रूसी अष्टाधिकारी गैर रूसी राष्ट्रीयताओं का अपमान, मानमर्दन और उत्पीड़न करने में किसी प्रयास का विस्तार नहीं करते थे। वे जारशाही के हाथों अकथनीय दुर्दशा झेलने को बाध्य थे जिसे गैर रूसी लोगों का जल्लाद और उत्पीड़क ठीक ही कहा जाता है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय ;देशीय अल्पसंख्यकों के सदस्यों का उच्च प्रतिशत क्रांति का प्रतिभागी रहा।

जारशाही साम्राज्य में राष्ट्रगत उत्पीड़न से मुक्ति समाजवादी क्रांति की विजय-सहवर्ती थी। राजनैतिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के परिणाम के रूप में बाल्टिक क्षेत्र, मध्य एशिया, काकेशसपार और अन्य क्षेत्रों के लोगों द्वारा महसूस किये जा रहे परायेपन के अतिरिक्त इन क्षेत्रों के लिये जारशाही आर्थिक नीतियों द्वारा निर्धारित आर्थिक पिछड़ेपन ने सुनिश्चित किया कि वे भूमि के प्रश्नों में सशक्त भाग के साथ प्राथमिकतः निषिद्ध आंदोलित बने रहें। उनकी अपनी भाषा, संस्कृति, समान अवसर और एक भिन्न राजनैतिक पहचान की भी मांग करते हुए राष्ट्रीय स्व-निर्धारण के लिये सशक्त आंदोलन सतह पर आये। बोल्शेविकों ने किसानों के लिये भूमि के साथ ही विलगाव के अष्टाधिकार और स्वैच्छिक संघ का समर्थन किया। इन क्षेत्रों के किसान वर्ग ने जारशाही राजतंत्र पर समाजवादी विकल्प की विजय में जीवंत भूमिका अदा की और राष्ट्रवादी उद्देश्यों के सभी उदारवादी समाधानों की पूर्णरूप से उपेक्षा कर दी।

9. आर्थिक संकट

रूसी क्रांति के आर्थिक कारण प्रथम विश्वयुद्ध द्वारा चक्रवर्तित जार के दुष्प्रबंधन पर मुख्यतया आंदोलित थे। 15 लाख से अष्टाधिक लोग सेना में शामिल हो गए, इससे कारखानों में और खेतों पर कामगारों की अपर्याप्त संख्या ही बची रह गई। इसका परिणाम खाद्य और पदार्थों की व्यापक कमी के रूप में सामने आया। कारखाना कामगारों को दारुण कार्यस्थितियों में, कम मजदूरी पर बारह से चौदह घंटे काम करना पड़ता था। बेहतर परिस्थितियों और उच्चतर मजदूरी के लिये कई दंगे और हड़तालें

हुई। हालाँकि कई कारखाने उच्चतर मजदूरी देने को राजी हो गए किंतु युद्ध-कालीन मंदी ने इस वृद्धि को बेअसर कर दिया। कीमते उफँची हो गईं क्योंकि युद्ध के दौरान सभी प्रकार के सामान और खाधान्न दुर्लभ हो गए। सामान्य तौर पर 1914 और 1917 के मध्य कीमतें 500-700 प्रतिशत तक

15. इसका अर्थ अन्य राष्ट्रीयताओं; देशीयताओं की भाषा, साहित्य व संस्कृति का दमन था।

बढ़ गई। खाधान्न और सभी प्रकार की वस्तुओं की कमी निम्नलिखित कारणों की वजह से थी : ;1. रूस केंद्रीय शक्तियों की नाकाबंदी के कारण सभी प्रकार की बाहरी सहायता से विच्छिन्न हो गया था। ;2. परिवहन व्यवस्था लचर थी ;3. युद्ध के आरंभिक दौर में ही गेहूँ उत्पादक यूक्रेन तबाह हो गया था ;4. कारखाने अस्वाभाविक रूप से विशाल सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सैन्य साजोसामान के निर्माण हेतु बाधे थे। 16. रोट्टी की कीमतों में बेहिसाब वृद्धि के कारण बहुत से रूसी लोगों को भूख का सामना करना पड़ा था। भूख कामगारों को हड़तालों की लहरों की ओर ले गई जिनके नारों में केवल आर्थिक माँगें ही नहीं बल्कि राजनैतिक माँग भी शामिल थी: जारशाही का नाश हो।

एक विरोधा प्रदर्शन के उत्तर में निकोलस द्वितीय ने हिंसक प्रत्युत्तर दिया, औद्योगिक कामगार हड़ताल पर चले गए और रेलमार्गों तथा परिवहन संजालों को प्रभावी रूप से अपंग बना दिया गया। जो कुछ आपूर्ति उपलब्ध भी थी उसका प्रभावकारी परिवहन नहीं हो सकता था। जैसे-जैसे वस्तुएँ दुर्लभ होने लगीं कीमतें भी आसमान छूने लगीं। 1917 तक अकाल ने कई विशाल नगरों को अपनी चपेट में ले लिया। अपने देश की आर्थिक पीड़ा के समाधान में निकोलस की विपफलता और तत्काल समाधान का साम्यवादियों का वादा क्रांति के सारभाग में समाविष्ट था।

10. प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभाव

अगस्त 1914 में युद्ध का प्रारंभ प्रभावी सामाजिक और राजनैतिक विरोधा प्रदर्शनों के तात्कालिक रूप से शांत होने का कारण बन गया जिससे समान बाहरी शत्रु का सामना किया जा सके किंतु यह देशभक्तिपूर्ण एकता ऐंठिक दिनों तक टिकी नहीं रह सकी। निष्कर्षहीन रूप से खिंचते हुए युद्ध से उत्पन्न युद्ध-क्लांति ने ऐंठिरे-ऐंठिरे अपना शुल्क वसूल करना प्रारंभ कर दिया। उसके उपर यह आंतरिक टूटन अत्यैंठिक महत्वपूर्ण थी: हालाँकि बहुत से सामान्य रूसियों ने युद्ध के प्रारंभिक कुछ हफ्तों तक जर्मनी-विरोधी प्रदर्शनों में हिस्सा लिया किंतु संदेहवाद और भाग्यवाद सर्वाैंठिक

प्रचलित प्रतिक्रिया के रूप में सामने आए जर्मनी के विरुद्ध शत्रुभाव और अपने जीवन व भूमि की रक्षा की इच्छा जार अथवा सरकार के प्रति समर्थन में आवश्यक रूप से अनूदित नहीं हुई।

युद्ध में रूस की पहली मुख्य भिड़ंत विनाशकारी थी: 1914 के टैन्नेनबर्ग के युद्ध में 120,000 से अधिक रूसी सैनिक मारे गए, घायल हुए अथवा पकड़े गए जबकि जर्मनी के हताहतों की संख्या केवल 20,000 रही। 1915 के शरदकाल में निकोलस द्वितीय ने रूस के मुख्य युद्ध क्षेत्रों पर व्यक्तिगत रूप से दृष्टि रखने के लिए सेना का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया और सरकार का कार्यभार अपनी महत्वाकांक्षी किंतु अयोग्य पत्नी अलेक्जेंद्रा को सौंप दिया। शाही सरकार में भ्रष्टाचार और अक्षमता की सूचनाओं का आविर्भाव आरंभ हो गया और शाही परिवार पर ग्रेगोरी रासपुतिन के बढ़ते प्रभाव ने व्यापक विद्वेष भड़काया। 1915 में चीजों ने और बुरी अवस्था की ओर गंभीर मोड़ ले लिया जब जर्मनी ने अपने आक्रमण का केन्द्रबिंदु पूर्वी मोर्चे को स्थानांतरित कर दिया। श्रेष्ठतर जर्मन सेना जो बेहतर नेतृत्व, प्रशिक्षण व आपूर्ति से लैस थी दुःसज्जित रूसी सेना के विरुद्ध भयानक रूप से प्रभावकारी थी और अक्टूबर 1916 के अन्त तक रूस ने 1,600,000 से 1,800,000 के बीच सैनिकों को खोया, इसके अतिरिक्त 2,000,000 सैनिक युद्धबंदी हुए और 1,000,000 लापता थे, कुल मिलाकर यह संख्या लगभग 5,000,000 थी। इन विचलित कर देने वाली क्षतियों ने सैनिक विद्रोह में सुनिश्चित भूमिका निभाई जो उपस्थिति दर्ज कराने लगे थे और 1916 में शत्रु के साथ भ्रातृभाव स्थापन की सूचनाएं प्रसारित होनी प्रारंभ हो गईं। सैनिक भूखे थे और उनके पास जूतों, गोला-बारुद, तथा हथियारों तक का अभाव था। व्यापक विस्तृत असंतोष ने नैतिक साहस में कमी की और आगे सैन्य पराजयों की श्रृंखला ने उसकी जड़ें खोद दी

16. चूंकि रूस औद्योगिक रूप से पिछड़ा हुआ था अतः यह आवश्यक पाया गया कि जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिये एक विशाल सेना की नियुक्ति की जाए जिससे संख्याबल में उसकी श्रेष्ठता उपकरणों में उसकी अक्षमता की क्षतिपूर्ति कर सके। 1917 तक कामकाजी आयु की पुरुष जनसंख्या के 37%, लगभग एक सौ पचास लाख, लोग नियुक्त किये जा चुके थे। यह श्रमिकों की कमी और कारखानों में कम उत्पादन की ओर ले गया।

हताहत होने की दरें विनाश का जीवंत चिह्न थीं। पहले से ही युद्ध के केवल पाँच महीनों में, 1914 के अन्त तक 400,000 रूसी लोग अपना जीवन बलि चढ़ा चुके थे और लगभग 1,000,000 घायल थे। उम्मीद से कहीं पहले ही अल्प-प्रशिक्षित रंगरूटों को सक्रिय सेवा के लिए बुला लिये जाने की प्रक्रिया समूचे युद्ध के दौरान जारी रही तथा विचलित करने वाली क्षतियों का आरोपण भी जारी रहा। अधिकांश वर्ग ने भी असाधारण हेर-पफेर के दर्शन किये, विशेषतया निचले सोपानों की पर

जिन्हें सैनिकों की पदोन्नति के जरिये शीघ्रतापूर्वक भर दिया जाता था। सामान्यतया किसान या कामगार पृष्ठभूमि के इन लोगों को 1917 में सैन्यदलों के राजनीतिकरण में विशाल भूमिका अदा करनी थी।

युद्ध की विशाल क्षतियां केवल लोगों तक सीमित नहीं थीं। सेना को शीघ्र ही राइपफलों और गोलाबारूद के साथ ही वर्दियों और राशन की कमी झेलनी पड़ी और 1915 के मध्य तक ऐसे लोग मोचो± पर भेजे जाने लगे जिनके हाथों में हथियार नहीं होते थे। उम्मीद की जाती थी कि वे युद्ध के मैदान में खेत रहे दोनों पक्षों के सिपाहियों के हथियारों को हासिल कर स्वयं को शस्त्रासज्जित कर सकते हैं।

प्रत्यक्षतया पर्याप्त कारणों के साथ सैनिकों ने कभी यह अनुभव नहीं किया कि उन्हें मानवजीव अथवा एक मूल्यवान सैनिक माना गया हो बल्कि इसके बजाय उन्हें समृद्ध और सत्तासंपन्नों के स्वाधो± के लिये अपव्यय किया जाने वाला कच्चा माल माना गया। 1915 की वसंत ऋतु तक सेना मंथर गति से पीछे हट रही थी - और यह हमेशा व्यवस्थित नहीं था- पलायन, लूटमार और अव्यवस्थित पलायन असामान्य नहीं थे। हालांकि 1916 तक परिसिथितियां कई संदर्भो± में बेहतर हो गईं। रूसी सेनाओं ने पीछे हटना बंद कर दिया और यहां तक कि कुछ आक्रमणों में कुछ छुट-पुट जीतें भी हासिल हुईं। अगरचे अनगिनत इंसानी जिंदगियों की कीमत पर। इसके अलावा कमी की समस्या घरेलू उत्पादन में बढ़ोत्तरी के गंभीर प्रयासों द्वारा बहुत हद तक सुलझा ली गई। हालांकि 1916 के अंत तक सैनिकों का नैतिक बल 1915 की विशाल वापसी के दौरान रहे हुए स्तर से भी अधिक नीचे आ गया था। मनोबल में कमी; जैसा युद्ध और क्रांति में रूसी सेना के अग्रणी इतिहासकार एलन वाइल्डमैन द्वारा तर्क दिया गया। "आंतरभूत रूप से इस परम हताशा की अनुभूति में जड़ जमाए हुए थे कि क्या यह नरबलि कभी समाप्त होगी और क्या विजय से मिलती-जुलती कोई चीज हासिल की जा सकेगी।

निस्संदेह युद्ध विनाशकारी था और ऐसा केवल सैनिकों के लिये नहीं था। 1915 के अंत तक ऐसे लक्षण दिखने लगे थे कि युद्धकालीन मांगों के उच्चिष्ठ दबाव के अंतर्गत अर्थव्यवस्था ठप होती जा रही है। खाद्यान्न की कमी और बढ़ती हुई कीमतें मुख्य समस्याएँ थीं। मुद्रास्फीति चेतावनीपरक त्वरित दर से वास्तविक आय को नीचे ला चुकी थी और वस्तुओं की कमी ने उन्हें भी खरीदना मुश्किल बना दिया था जिन्हें कोई वहन कर सकता था। राजधानी पेत्रोग्राद 17 में यह कमी विशेष तौर पर एक समस्या थी जहाँ आपूर्ति स्थलों से दूरी और लचर परिवहन संजाल ने मामलों को विशिष्ट तौर पर बुरा बना दिया था। रोटी, चीनी, मांस और अन्य आवश्यक वस्तुओं के अभाव के कारण दुकानें जल्दी या पूरी तरह बंद होने लगी थी और जो कुछ बचा हुआ था उसे पाने के लिये कतारें लंबी होती जा रही थीं। खाना खरीदने में समर्थ होने और उसे वास्तविक रूप से खरीदने दोनों की कठिनाइयाँ बढ़ती ही जा रही थीं। बिना किसी आश्चर्य

के 1915 के मध्य से हड़तालों में मंथर वृद्धि होने लगी और अपराधों के साथ भी ऐसा ही हुआ किंतु देश के अधिकांश भागों में लोग दुःख भोगते और सहते रहे-खाने के लिये शहर में धूमकेतु की तरह घूमते रहे-पेत्रोग्राद में कामकाजी महिलाएं कथित तौर पर सप्ताह में चालीस घंटे खाने की कतारों में खर्च करती थीं – भिक्षावृत्ति करते हुए, वेश्यावृत्ति अथवा अपराधों की ओर उन्मुख होते हुए, गरमाहट हेतु अंगीठियों को जलाने के निमित्त लकड़ी की चारदीवारियों को उखाड़ते हुए, समृद्धों की भस्मना और यह सोचते हुए कि यह सब कुछ कब और कैसे समाप्त होगा। सार्वजनिक व्यवस्था के लिये उत्तरदायी सरकारी अधिकारी पर्याप्त कारणों से इस बात के लिये चिंतित थे कि लोगों का हौर्य कब तक बना रहेगा। अक्टूबर 1916 में सुरक्षा आरक्षी ओखराना की पेत्रोग्राद शाखा का एक प्रतिवेदन "दैनिक जीवन की परेशानियों से आग बबूला हो रहे साम्राज्य के निम्नतर वर्गों द्वारा निकट भविष्य में दंगों की संभावना के बारे में बड़े मुंहपफट तरीके से चेतावनी देता है।

17. पूर्वतया सेंट पीटर्सबर्ग नगर

इन सभी संकटों के लिये निकोलस द्वितीय को दोषी करार दिया गया और जो अल्पसमर्थन उसे प्राप्त था वह भी छीजने लगा। जैसे ही असंतोष बढ़ा नवंबर 1916 में ड्यूमा ने निकोलस को चेतावनी जारी की। इसमें कहा गया कि यदि सरकार का संवैधानिक रूप से सामने नहीं लाया गया तो एक भयंकर विनाश देश को अपरिहार्य रूप से अपनी चपेट में ले लेगा। हालाँकि यथाप्रचलित रीति के अनुसार निकोलस ने उनकी उपेक्षा कर दी और कुछ महीनों के बाद 1917 की फरवरी क्रांति के दौरान रूस का जारशाही शासन ढह गया। एक साल बाद जार और उसका संपूर्ण परिवार मौत के घाट उतार दिये गए।

अंततः अपने देश और युद्ध के जार के अनुपयुक्त संचालन ने जारशाही को विनष्ट कर दिया और यह अंत उसके शासन व जीवन दोनों की कीमत पर हुआ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि रूस में क्रांति के कई कारण मौजूद थे। कुछ राजनैतिक तो कुछ सामाजिक व आर्थिक थे-किंतु उन सबमें कुछ चीजें एक समान थीं- उन सबने जार निकोलस द्वितीय को राज्यच्युत करने में सहायता दी। आरंभिक 20वीं शती में रूस एक विशाल क्षेत्र को आच्छादित करता था जिसमें एशियाई महाद्वीप का बड़ा हिस्सा था और एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति जार निकोलस द्वितीय इस समूचे भाग पर शासन करता था। अधिकतम देश अतिजनसंख्या वाले क्षेत्रों में, गरीबी में निवास

करता था, मध्यकालीन युग के समान परिस्थितियों में काम करता था और अत्यधिक अल्प भुगतान प्राप्त करता था। पेत्रोग्राद और मास्को जैसे केवल दो औद्योगिक शहर मौजूद थे और शेष देहाती झुग्गी बसियां थीं। दसियों करोड़ की जनसंख्या के साथ लगभग 8000 किमी लंबे चौड़े इस विशाल देश पर जो पोलैंड से लगभग अलस्का तक विस्तृत था, शासन करते हुए निकोलस द्वितीय को कापफी कठिन समय का सामना करना पड़ा। उसके साम्राज्य के विशाल आकार की वजह से हम उसके प्रति थोड़े सहानुभूतिपूर्ण हो सकते हैं किंतु उसकी कुछ समस्याएं उसकी अपनी गलतियों के कारण उत्पन्न हुईं। वह एक कठोर निरंकुश राजा था जो लोगों को उनके अपने जीवन पर कोई शक्ति अथवा नियंत्रण नहीं देता था। 1914 में युद्ध पर जाने का उसका निर्णय शाही शासन के लिये विनाशकारी सिद्ध हुआ।

रिचर्ड पाइप्स के अनुसार - "यदि प्रथम विश्वयुद्ध नहीं हुआ होता तो शायद रूसी शाही सरकार ; शेष गड़बड़ियों सेद्ध किसी तरह पार पा लेती और समय के साथ संसदीय शासन के किसी रूप में विकसित होती।